सामयिक सलाह -2012 क्या करें..... ? कब करें..... ? क्यों करें..... ?

जनवरी

- प्रथम सप्ताह तक शीघ्र पकने वाला गेहूँ बोया जा सकता है।
- समय से बोये गेहूँ में 20-25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, किरीटजड़ अवस्था में नत्रजन डालें, एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी, में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें, कटुआ इल्ली के प्रकोप से रक्षा करें एवं असिंचित अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया घोल कीटनाशक के साथ ही छिड़काव करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल बढ़वार पर होती है अतः सिंचाई करना आवश्यक है।
- शीतकालीन गन्ने में नत्रजनयुक्त उर्वरक (यूरिया) का एक चौथाई भाग दें, पकी हुई फसल की कटाई कर कारखाना अथवा बाजार भिजवाने की व्यवस्था करें, गुड़ बनाने का कार्य करें।
- गेहूँ में यदि चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार अधिक हो तो 2.4-डी सोडियम साल्ट 500-800 ग्राम सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 625 ग्राम से 1 किलो) प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें। यदि चौड़ी तथा संकरी दोनों प्रकार के नींदा हो तो बुवाई के 25-30 दिन बाद आइसोप्रोट्यूरान दवा 750 मि.ली.से 1 लीटर सक्रिय तत्व (दवा की मात्रा 1-1.25 लीटर 75 डब्ल्यू.पी.) प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सरसों में सफेद फफोला तथा डाउनी मिल्ड्यू रोग आने पर मेटालेक्जिल (2 ग्राम/ली.पानी)का छिड़काव दोहराया जा सकता है।
- सूरजमुखी के बीजों को साफ सुपर/कार्बेन्डाजिम कवकनाशी (2 ग्राम/किलो बीज)द्वारा उपचारित कर बोना चाहिए।
- विभिन्न फसलों के भभूतिया या चूर्णी फफूंदी रोग की रोकथाम हेतु डिनोकेप (1 मिली.) या कार्बेन्डाजिम/पेन्टाकोनाजोल (1.5ग्राम) में से किसी एक दवा का छिड़काव दोपहर बाद करें तथा 10-15 दिन के बाद दूसरा छिड़काव करें।
- दलहनी फसलों में पौला मोजेक रोग की रोकथाम हेतु वाहक कीट-सफेद मक्खी के नियन्त्रण हेतु मिथाइल डेमेटान (2 मि.ली./ली.पानी) का छिड़काव दोपहर बाद करें तथा 10-15 दिन के बाद दूसरा छिड़काव करें।
- गेहूँ की पर्ण अंगमारी या धब्बा रोग के रोकथाम हेतु क्लोरोथेरोनिल (2 ग्राम)/मेन्कोजेब/तामयुक्त दवा (3 ग्राम) में से किसी एक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चना में फलीछेदक के प्रकोप की अवस्था में एन.पी.एस.वी. 250 एल.ई. का छिड़काव करें अथवा प्रोफेनफास -साइपरमेथिन 44 ई.सी.का 1 लीटर छिड़काव करें। छोटी इल्लियों के लिये इण्डोसल्फान 35 ई.सी.का 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- मटर, मसूर, सरसो, अलसी आदि में माहो का प्रकोप होन पर मिथाइल डिमेटान का 25 ई.सी. अथवा डायमिथोएट 30 ई.सी. का 1 लीटर /हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- आम, अमरूद, आंवला, कटहल आदि के तनों में तनाछेदक/छाल खाने वाले कीटों का प्रकोप होने पर प्रभावित तनों के छिद्रों में रूई के फाहों को डायक्लोरवास 76 ई.सी. या मोनोक्रोटोफास से भिगोकर डालकर गीली मिट्टी से बंद कर दें। इस हेतु मिट्टी के तेल का भे उपयोग किया जा सकता है।
- नींबूवर्गीय फलों के प्रवर्धक हेतु कलिकायन का कार्य करें एवं पपीता की पौध तैयार करने हेतु बीजों की बुवाई करें।
- गर्मी की फसल हेतु कद्दूवर्गीय सब्जियों के बी पॉलीथीन की थैलियों में बोंए।
- प्याज की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा देकर सिंचाई करें।
- प्याज में बैंगनी धब्बा रोग से बचाव के लिए ब्लाईटावस -50 या डायथेन एम-45 नामक दवा का छिड़काव रोगर कीटनाशक दवा के साथ करें।
- मिर्च में फल गलन के नियंत्रण हेतु ब्लाईटावस 50 का छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में अच्छी फलत के लिए लकड़ी लगाकर सहारा दें।
- आलू की फसल में पछेती झुलसा नामक रोग के नियंत्रण हेतु 0.25 प्रतिशत डायथेन एम-45 या 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।
- आम के वृक्ष में चेपा कीट की रोकथाम के लिए ग्रीस का लेप मुख्य तनों पर जमीन से 1 मीटर की ऊंचाई तक करें।
- सब्जी फसलों में चूर्णी फफूंदी रोग से बचाव के लिए 0.1 प्रतिशत बेविस्टीन घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतराल से दो बार करें।
- जनवरी माह में टमाटर के पौधों को रोपने से अप्रैल माह में फल मिलना शुरू हो जाता है जबकि इस समय बाजार में टमाटर की आवक कम रहती है जिससे बाजार मूल्य अधिक मिलेगा।
- गेंदा में फूलों के नीचे माइट का प्रकोप होता है, इसमें फूलों की कलियों के नीचे धूल से लक्षण दिखते हैं। रोकथाम के लिए समान्यतः रोगर/मोनोक्रोटोफास का 1 मि.ली. एक लीटर पानी में छिड़काव करें।
- गुलाब में रोज मिक्चर 15-15 दिन के अंतराल पर अवश्य दें।

फरवरी

- गेहूं फसल में कल्से तथा तना गांठ बनने की अवस्था में सिंचाई करें।
- चने में दाने भरने की अवस्था में सिंचाई करें।
- ग्रीष्मकालीन मूंग एवं तिल की बुवाइ करें। मूंग में पीला मोजेक निरोधक जातियां जैसे हम- 1 का उपयोग करे।
- आम फसल में मिली बग से बचाव हेतु पेड़ में जमीन से उपर लगभग एक फीट में ग्रीस बैंड लगाएं तथा पेड़ों के नीचे जमीन की जुताई कर क्लोरोपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण का भुरकाव करें।
- आम में फुदका कीट का प्रकोप होन पर मिथाइल डिमेटान 25 मिली. अथावा डायमिथेएट 30 ई.सी. 2 मिली. / लीटर पानी की दर से छिड़काव करें । शाम के समय आम के बगीचे में जगह-जगह सूखा कचरा इकट्ठा कर जला कर उसमें गंधक चूर्ण डालकर धूमण करें।
- गन्ने की बुवाई के पूर्व लगाने वाले टुकड़ो को दीमक से बचाव हेतु क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. दवा के घोल से उपचारित कर लें ।
- सरसों में चूर्णी फफूंदी या भभूतिया रोग आने पर डिनोकेप 1 मि.ली./कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू में पछेती अंगमारी रोग आने पर मेटालेक्जिल 1.5 ग्राम या एल्युमिनियम ट्रिस 2 ग्राम दवा का प्रति लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें।
- प्याज के बैगनी धब्बा (परपल ब्लाच) रोग की रोकथाम के लिये मेन्कोजेब/तामयुक्त दवा (3 ग्राम)/थायोफिनेट मिथाइल या कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम)/साफ सुपर (2ग्राम)में से किसी एक दवा का छिड़काव करें ।
- गेंहू में गेरूआ रोग दिखने पर जिनेब (3 ग्राम) या ट्राइएडीमीफॉन 50 मि.ग्रा./10 ली. पानी का छिड़काव करें।
- मटर में गेरूआ रोग की रोकथाम हेतु ट्राईडेमार्फ 1 मि.ली./ली. का छिड़काव करना चाहिए ।
- टमाटर, फूलगोभी, गाजर, मटर आदि आसानी से सस्ते मूल्यों में उपलब्ध हो जाते हैं। अतः इनका संरक्षण कर टमाटर सॉस, आचार, टमाटर प्यूरी बनायें । फूलगोभी, गाजर, मटर का मिश्रित आचार बनायें, जिसका उपयोग वर्ष भर किया जा सकता है।
- गर्मी की सब्जियों का पौध रोपण करें।
- ग्रीष्म फलदार वृक्षों जैसे आम, आंवला, चीकू, कटहल आदि में फूल एवं फल आते समय सिंचाई बंद रखें ।
- आम में गुच्छा रोग से ग्रस्त पुष्प गुच्छों को नष्ट कर दें, एवं पोटेशियम मेटाबाई सल्फेट का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें ।
- नये लगाये गये आम, अमरूद, आंवला, कटहल, चीकू, नींबू आदि पौधों में सिंचाई करें।
- आम का फुदका कीट एवं चूर्णी फफूंदी से बचाव के लिए कार्बारिल डस्ट 2 ग्राम और सल्फेक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फरवरी माह में केला एवं पपीता लगाने की तैयारी करें, गोभीवर्गीय फसल में 750 मि.ली. मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी.दवा छिड़के।
- आलू की फसल खुदाई के पहले सिंचाई बंद कर देवें और जमीन से ऊपर पौधे की कटाई कर दें, इससे आलू के कंद पुष्ट होंगे।
- अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों की बोआई एवं पहले से तैयार पौधों की रोपाई करें, भिण्डी की बोआई करें, धनिया एवं सौंफ की फसल में चूर्णी फफूंद से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें ।
- ग्रीष्म काल के प्रारंभ में फूल प्राप्त करने के लिए गेंदे की बुआई करें, रजनीगंधा में खाद एवं उर्वरक दें, ग्रीवचांर (एलोवेरा) के नये पौधे निकालकर बेचें, मेन्था के सकर्स नर्सरी में लगायें, सफेद मूसली की कंद की खुदाई कर ग्रोंरें तथा छीलकर सुखायें ।
- कस्तूरी भिण्डी व चन्द्रसूर की कटाई करें, लेमन घास की बुवाई करें।
- मौसमी पुष्पों के बीज बोने का कार्य करें।

मार्च

- चना, अलसी, तिवड़ा, मटर, राजमा, मसूर एवं सरसों इत्यादि फसलों की कटाई कर ग्रीष्मकालीन फसलों हेतु खेत की तैयारी करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में लाल कद्दू भृंग के नियंत्रण हेतु इण्डोसल्फान 35 ई.सी. दवा का 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें अथवा राख में मिट्टी तेल मिलाकर फलों के नीचे रखें ।
- फल बेधक मक्खी से बचाव हेतु विष प्रपंच का उपयोग करें । इस हेतु मेलाथियान 50 ई.सी. 50 मि. ली. गुड़ (आधा किलो) एवं टीस्ट हाइड्रोलाइसेट को पानी में मिलाकर मिट्टी के बर्तनों में बगीचे में अनेक स्थानों पर लटका दें।
- सरसों की अंतिम अवस्था एवं कटाई के बाद फलियों को पेन्टेड बग हानि पहुंचाता है। इससे बचाव हेतु खड़ी फसल में मेलाथियान 50 ई.सी. का उपयोग करें।
- ग्रीष्मकालीन धान में कंसावस्था में तनाछेदक का प्रकोप होता है। इससे बचाव हेतु प्रपंच का उपयोग करें । आलू चिप्स, पापड़, आलू सूजाना मिश्रित पापड़ बनाकर वर्षभर के लिए रखें ।
- हरे पत्तेदार सब्जी मेथी, पालक को सुखाकर रखें ।गर्मी के उपयोग हेतु नींबू का शर्बत, आचार बनाकर रख लेवें ।
- जो फसल पककर तैयार होती है, उन्हे कटाई कर साफ खलिहान में गहाई करें तथा अच्छी तरह सुखाकर भण्डारण करे।
- भण्डारण के समय दानों में नमी 9-10 प्रतिशत से ज्यादा न रहे ।
- आम में सिंचाई एवं पोषण प्रबंधन का कार्य करें।
- फसल काटने के बाद यदि खेत में नमी हो तो खाली खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जी, भिन्डी एवं बरबट्टी आदि में पौध संरक्षण के उपाय करें । यदि बोना शेष रह गया हो तो 15 मार्च तक बुवाई करें।
- गर्मी की सब्जियों की रोपाई एवं पत्तेदार सब्जियों की बुवाई करें।
- शीतकालीन मौसमी पुष्पों के बीज एकत्रित करें। संतरा से रक्वैश, केला, पपीता, सेव तथा जैम, आंवला, सेव तथा पपीता का मुरब्बा एवं फल-सब्जी सुखाने का कार्य करें ।
- इस माह में आलू की पैदावर भरपूर मात्रा में होती है महिलाएं आसानी से आलू चिप्स, पापड़, आलू साबूदाना मिश्रित पापड़ आसानी से बना सकती है। इसके अतिरिक्त हरी पत्ते वाली सब्जियों जैसे - मेथी, पालक को सुखाकर रख सकते हैं।
- ग्रीष्मकालीन धान में पर्णच्छद् अंगमारी (शीत ब्लाइट) रोग के लक्षण दिखते ही हेक्साकोनाजोल (1 मि.ली./ली. पानी) का दिइकाव करें ।दूसरा छिड़काव 12-15 दिन के बाद करना चाहिए ।
- सब्जियों में चूर्णी फफूंदी या भभूतिया रोग आने पर कार्वेन्डाजिम (1 ग्राम)/डिनोकेप (1 मिली.) का घोल प्रति लीटर पानी की दर से बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी में पीला शिरा मोजेक रोग आने पर रोग वाहक कीट की रोकथाम के लिये मिथाइल डेमेटान (2 मिली./ली) कीटनाशक दवा का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें । रोगग्रस्त पौधों को यथासंभव खेत से निकालकर नष्ट कर दें।
- आम में फल झड़ने को रोकने के लिए एन.ए.ए. 20-25 मिग्रा. प्रति लीटर पानी या प्लेनोफिक्स 2 मिली. तथा केराथेन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 15-15 दिन में छिड़काव करें।
- कटहल में फल गलन से बचाव हेतु डायथेन एम-45 या जिंक कार्बोमेट 0.025 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें ।
- कद्दूवर्गीय सब्जीयों को कीड़ो से बचाव हेतु विष प्रपंच का प्रयोग करें या कार्बारिल डस्ट का भुरकाव करें ।
- टमाटर बैंगन, मिर्च, भिण्डी आदि फसलों में निवाई-गुड़ाई कर सिंचाई करें ।
- प्याज की तैयारी फसल की खुदाई से 10-15 दिन पहले पानी देना बंद कर दें एवं पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दें ।
- प्रारंभ में गेंदा के तैयार पौध की खेत में रोपाई करें, ग्लैडियोलाई कंद की खुदाई कर ठंडे स्थानों पर भण्डारण करें ।
- नर्सरी में तैयार मेथा पौध की रोपाई करें, बच के प्रकंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- पत्तियां पीली पड़ने पर कंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें ।
- लेमन घास की फसल में गोबर घोल का छिड़काव करें।

प्रेषक-
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-233063
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....
.....
.....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-8 | त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी, फरवरी, मार्च 2012 | वर्ष-5

संपादक मंडल

संरक्षकः- डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शकः- डॉ. जे. एस. उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि. रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोतः- डॉ. यू. एस. गौतम
आंच. परियोजना निदेशक जें. एन. के. वि. जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक

डॉ.एस.पी.सिंह
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादकः डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा (उद्यानिकी)
श्री टी.डी.साहू. (मृदा विज्ञान)

केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिक एवं दूरभाष क.

1. डॉ.एस.पी.सिंह, कार्यक्रम समन्वयक 9424139197
2. श्री टी.डी. साहू, मृदा विज्ञान 9826970862
3. डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा, उद्यानिकी 9926171360

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भण्डारण में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं केन्द्रीय भण्डारण निगम, रायपुर के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । समापन समारोह में उपस्थित माननीय विधायक एवं संसदीय सचिव डॉ. सियाराम साहू, निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ. जे.एस. उरकुरकर माननीय सदस्य प्रबंध मंडल डॉ. मनहर आडिल, क्षेत्रीय प्रबंधक केंद्रीय भण्डारण निगम श्री आर.के.सिंह, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.के.श्रीवास्तव, कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. एस.पी.सिंह, श्री टी.डी.साहू, वैज्ञानिक मृदाविज्ञान, डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा, वैज्ञानिक उद्यानिकी एवं कबीरधाम जिले के विभिन्न गांवो से उपस्थित 35 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण में किसानों ने धान, सोयाबीन तथा विभिन्न फल तथा सब्जियों के भण्डारण के संबंध में तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में सभी 35 किसानों को भण्डारण के लिए कोठी प्रदान की गई।

निदेशक विस्तार सेवायें डॉ. जे.एस. उरकुरकर किसानों को भण्डारण के संबंध में उद्बोधन देते हुए।

माननीय सदस्य प्रबंध मण्डल डॉ. मनहर आडिल कृषकों को भण्डारण के लिए कोठी प्रदान करते हुए।

सर्दियों में फलों एवं सब्जियों का परिरक्षण कर लाभ कमाएं

छत्तीसगढ़ में जनवरी माह में सब्जियों की भरपूर पैदावार होने के कारण व बारिश से बाजार में आवक बढ़ने से इस वक्त टमाटर, आलु, मिर्च, अदरक, लहसुन, मूली, फुलगोभी, पत्तागोभी, नींबु आदि के दाम अपने न्यूनतम स्तर पर है ऐसे वक्त यदि ग्रामिण महिलाएँ एवं बेरोजगार युवक फल व सब्जियों जो कि दैनिक आवश्यकता से अधिक है इन्हे विभिन्न परिरक्षित उत्पाद जैसेः- टमाटर केचप, सॉस, आचार, मुरब्बा, स्क्वेश आदि बनाकर बाजार में विक्रय करते हैं तो जहाँ इन्हें भरपुर आमदनी होगी वहीं फल व सब्जियां खराब होन से भी बचेंगे व ग्रामीण महिलाओ और बेरोजगार युवको को रोजगार का साधन भी मिलेगा। जैसा ज्ञात है कि भारत में प्रतिवर्ष फल व सब्जियों को तुड़ाई से लेकर उपभोक्ता तक पहुंचने तक 25-30 प्रतिशत व्यर्थ चला जाता है। इसके परिरक्षण का प्रतिशत भी बाकी विकसित देशों की अपेक्षा बहुत कम हैं ये फल व सब्जियाँ हमें खनिज पदार्थ, विटामिन एवं रेशा पदार्थ प्रदान करती है इनका परिरक्षण कर इस परिरक्षित उत्पादों के पौष्टिक गुणों का वर्ष भर उपयोग किया जा सकता है।

फल एवं सब्जियों के विभिन्न परिरक्षित उत्पाद

- डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा

कृषि की उन्नत जानकारी हेतु संपर्क करें, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.) फोन नं. 07741-233063 एवं किसान कॉल सेन्टर 1800 180 1551 (निःशुल्क)।

सभी पाठकों को नववर्ष 2012 की हार्दिक शुभकामनाएं ....

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परिक्षण (ऑनफार्म टेस्टिंग)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	मटर	के.पी.एम.आर	उन्नत किस्म	4	4
योग				4	4

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (एफ.एल.डी.)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वालीतकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	गेहूं	जी.डब्ल्यू., 273	उन्नत किस्म	12.5	12
2.	चना	जे.जी. 74	उन्नत किस्म	12.5	12
योग				25	24

कृषकों एवं कृषि महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	71
2.	उद्यानिकी	3	1	53
3.	पौध संरक्षण	4	1	75
4.	मृदा विज्ञान	3	1	57
योग		14	4	256

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
प्रक्षेत्र दिवस	1	24
कृषक संगोष्ठी	2	41
वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	13	69
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	49	141
सामूहिक चर्चा लोकप्रिय आलेख	3	72
योग	4	मास
	72	347

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	वर्ष	विषय संख्या	क्रेडिट्स
1.	डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा	विषय वस्तु	प्रथम	1	3 (2+1)
		विशेषज्ञ	द्वितीय	1	3 (2+1)
		उद्यानिकी	तृतीय	1	3 (2+1)
			चतुर्थ	2	3 (0+3), 2(0+2)
योग				5	14

बीजोत्पादन कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, नेवारी प्रक्षेत्र में रबी 2011-12 में 25 एकड़ रकबा में निम्न बीजोत्पादन कार्यक्रम लिया जा रहा है।

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	चना	वैभव	आधार	12
योग				12

रबी के बाद गर्मियों में मूंग की खेती करें

रबी की समाप्ति के पश्चात् खेत अधिकतर खाली पड़े रहते है इस समय यदि किसान दलहनी फसलों में मूंग की खेती करें तो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी व अतिरिक्त आय भी प्राप्त होगी।

मूंग की प्रमुख किस्में

किस्म	औसत अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि./है.)	प्रमुख विशेषताएं
पूसा विशाल	60-65	12-15	पीला मोजाइक निरोधक
पूसा बैसाखी	60-70	8-12	सभी फली एकसाथ पकती है।
पंत मूंग-2	60-65	10-12	पीला मोजाइक निरोधक
पंत मूंग-5	65-70	12-15	दाने चमकीले व बड़े होते है।
हम मूंग-1	60-65	8-10	पीला मोजाइक निरोधक

उपयुक्त मृदा- उड़द की खेती के लिए दोमट मृदा उपयुक्त होती है इसके अतिरिक्त जलनिकास युक्त बालुई दोमट मृदा में भी इसकी खेती की जा सकती है।

उपयुक्त समय- ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई 25 मार्च से 20 अप्रैल के मध्य करना चाहिए।

बोआई की विधि- देसी हल या सीडड्रील से 25-30 सेमी. की दूरी पर बोआई करना चाहिए। बोने के गहराई 4-5से.मी. रखनी चाहिए। गन्ना की फसल के दो पंक्तियों के बीच मूंग की पंक्ति की बाआई की जा सकती है।

बीजदार एवं बीजोपचार - 20-25 कि.ग्रा./हैक्टेयर बीज को कवकनाशी रसायन जैसे थीरम अथवा बाविस्टीन (2.5 ग्राम/कि.ग्रा.) की दर से उपचारित करने के बाद राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए।

उर्वरक प्रबंधन- मूंग की खेती के लिए 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता पड़ती है।

कटाई, मड़ाई एवं भण्डारण - जब फलियों का रंग पीले काले रंग का हो जाये तो तुड़ाई कर इकट्ठा कर लेना चाहिए। फलियों का 3-4 दिनो तक सुखाने के बाद मड़ाई कर थेशर या डंडो से पीटकर या बैल चलाकर दानों को अलग कर लें। जब दानों में 10 प्रतिशत नमी रह जाये तो भंडारण कर लेना चाहिए।

उपज-ग्रीष्मकालीन मूंग की 10-12 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती

- डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा, श्री टी.डी. साहू

ग्राम परसहा (कवर्धा) में किसानों को प्रशिक्षण देते वैज्ञानिक

आगामी तीन माह की गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परिक्षण (ऑनफार्म टेस्टिंग)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	मटर	अम्बिका	उन्नत किस्म	4	4
2.	ककड़ी	-	उन्नत किस्म	4	8
योग				8	12

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (एफ.एल.डी.)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वालीतकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	गेहूं	जी.डब्ल्यू. 273	उन्नत किस्म	12.5	12
2.	चना	जे.जी.74	उन्नत किस्म	12.5	12
योग				25	24

सेवारत/विस्तार कर्मियों के लिए प्रशिक्षण

क्र.	फसल	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	पौध संरक्षण	1	1	25
2.	उद्यानिकी	1	1	25
3.	मृदा परीक्षण	1	1	25
योग		3	3	75

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	83
2.	पौध संरक्षण	6	1	127
3.	उद्यानिकी	4	1	85
4.	मृदा विज्ञान	6	1	80
योग		20	4	375

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
कृषक दिवस	3	67
कृषक संगोष्ठी	2	63
वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	12	60
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	44	83
सामूहिक चर्चा	2	55
लोकप्रिय आलेख	2	मास
योग	65	328

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	वर्ष	विषय संख्या	क्रेडिट्स
1.	डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा	विषय वस्तु	प्रथम	1	3 (2+1)
		विशेषज्ञ	द्वितीय	1	3 (2+1)
		उद्यानिकी	तृतीय	1	3 (2+1)
			चतुर्थ	2	3(0+3), 2(0+2)
योग				5	14

बीजोत्पादन कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, नेवारी प्रक्षेत्र में रबी 2011-12 में 12 एकड़ रकबा में निम्न बीजोत्पादन कार्यक्रम लिया जा रहा है।

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	चना	वैभव	आधार	12
योग				12

गर्मीयों के लिए कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती की तैयारी करें

गर्मियों में प्राप्त होने वाली सब्जियों में कद्दूवर्गीय सब्जी जैसे- लौकी, करेला, खीरा, ककड़ी, कुम्हड़ा, तरबुज, खरबुज, टिण्डा, कुन्दरू, परवल का महत्वपूर्ण स्थान है।

कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती का उल्लेख नीचे दिया जा रहा है।

क.	सब्जी का नाम	बीज दर (कि./है.)	कतार से कतार की दूरी (मी.)	पौधे से पौधे की दूरी (मी.)	नत्रजन (कि./है.)	स्फुर (कि./है.)	पोटाश (कि./है.)	औसत उपज (क्विं./है.)
1.	लौकी	3-5	2.5	60	60	80	20	250-300
2.	करेला	5-6	2.0	50	75	60	60	150-175
3.	खीरा	1.5-2.0	1.0	50	60	40	40	100-150
4.	कद्दू	4-5	1.0	75	50	35	35	200-250
5.	खरबूज	3-4	1.5	50	80	60	65	175-250
6.	तरबूज	5-6	1.5	60	80	65	65	250-300
7.	टिण्डा	5-6	1.5	60	50	50	50	100-130
8.	तोरई	3-5	1.5	50	50	60	60	125-150

क.	सब्जी का नाम	प्रमुख किस्में
1.	लौकी	पूसा मेघदूत, पूसा मंजरी, पूसा समर प्रोलिफिक लोंग, पूसा नवीन, पूसा समर प्रोलिफिक राउंड, वरद, दिव्या, नवीन, काशीगंगा
2.	करेला	पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, अर्का हरित, एम.सी.-84, कोयम्बटूर लोंग
3.	खीरा	पूसा संयोग, पाइनसेट, खीरा-90, जापानी लोंग ग्रीन
4.	कद्दू	अर्का चंदन, अर्का सूर्यमुखी, सी.ओ.-2, पूसा विश्वास
5.	खरबूज	हरा मधु, पूसा शरबती, अर्का जीत, अर्का राजहंस, पूसा मधुरस
6.	तरबूज	शुगर बेबी, अर्का मानिक, पूसा बेदाना, दुर्गापुर केसर, दुर्गापुर मीठा
7.	टिण्डा	अर्का टिण्डा, एस. 48, सफेद हरा टिण्डा, हरा टिण्डा
8.	तोराई	पूसा चिकनी, पूसा नसदार

- डॉ. शिशिर प्रकाश शर्मा

कृषक के केले के बगीचे का निरिक्षण करते हुए वैज्ञानिक